भजन

देखा पिया तेरा नूरी नजारा

इश्क रब्द की हुई जहाँ बतियाँ,कैसी खिलवत कैसी सखियाँ

देखा पिया

1 मूल मिलावे मे पहुंची, चौसठ मंदिर देख ठगी

चार द्वार हैं चार दिशा मे, पहली थंबो की हार पड़ी

दूसरी हार चबूतरे उपर उस पर पसमी गिलम बिछी

2 चार रंगो के चार किनारे, फिरते कठेड़े पसम के तकिए

मोती झालर मे युक्त चंद्रवा बीच मे चित्रकला झलके

थंब चंद्रवा गिलम कठेड़ा से, किरणें रह रह झलक रही

(3) बीच चन्द्रवा के स्वर्ण सिहांसन, छःपाये छः डांडे जड़ें

दोऊ छत्रियां दोऊ सरूप पे, झालर सोहे जवेर जड़ी

पछिम में सिहांसन पिया प्यारी, हर्ष गई देख अखियां हमारी

(4) बारे हजार जुड़ी बैठी, दाड़िम की कलियां सकुची

निरखे धनी तिरछी नजर से, होठों पे मुस्कान सजी

एक तन एक दिल एक ही वाणी मांगे खेल कुफार का सारी